रात्रिक्लास 25.3.68 ओमशान्ति ''शिव बाबा याद है?''

जिसकी बुद्धि में जो ज्ञान रहता है वह फिर उसी अनुभव से सुनाते हैं। बाबा ने कहा था दो, तीन रोज़ बाबा आकर सुनेंगे। तो बाबा देखें कैसे मुरली चलाते हैं। लज्जा नहीं करनी चाहिए। लज्जा होती है तो समझा जाता है देहअभिमानी है। बैठ कर सुनाते हैं तो कहेंगे देहीअभिमानी है। बेहद के टिका हुआ है। बेहद की नॉलेज है तो बच्चों को सुनाते हैं। मूल बात तो है पावन बनने की। बहुत हैं जो रचना के आदि, मध्य, अंत का राज़ सुनाने अच्छा भाषण करते हैं; परन्तु वह याद की यात्रा बड़ी सूक्ष्म है। नॉलेज सुनाना स्थूल है। टीचर भी बनना है। किसको कहना अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो यह भी ज्ञान है। ज्ञान से सद्गति होती है। शास्त्र सुनने से सद्गति नहीं होती है; इसलिए उनको रूहानी वा स्प्रीचुअल ज्ञान नहीं कहा जाता है। वह तो तुम बच्चे ही जानते हो। रूहानी बाप कल्प–2 के संगमयुग पर आते हैं। तुम्हारी आत्मा को ज्ञान मिला है। बाप को भी ज्ञान है। वह फिर प्रवेश कर आकर सुनाते हैं। बाप में ज्ञान है। औरों को सिखलाते हैं। तो कहेंगे पहले तो बाप को विश्व का मालिक होना चाहिए; परन्तु यह वण्डर है मैं सिर्फ तुम बच्चों को ज्ञान सुनाता हूं। मैं नहीं बनता हूं। मैं भी तमोप्रधान बनूं तो तुमको सतोप्रधान कौन बनावेंगे? बाप कहते हैं मैं ही समझाता हूं। और कोई जानते ही नहीं हैं। बाकी यह गीता शास्त्र आदि सभी हैं भक्तिमार्ग के। .....से उन्नति नहीं होती है। नीचे ही गिरते जाते हैं। वास्तव में सभी का धर्मशास्त्र एक ही है। बाकी कहा जाता है व्यभिचारी ज्ञान। उनका फिर ज्ञान नहीं कहेंगे। भक्ति कहेंगे। ज्ञान है ही एक। तुम ही स्टूडेन्ट बनते हो, और तो सभी हैं भक्त। ब्राह्मण बने तब समझे हम बाबा के एडॉप्टेड चिल्ड्रेन हैं। परमात्मा बाप ऐसे नहीं कहेंगे यह एडॉप्टेड बच्चे हैं। नहीं। वह फिर कहेंगे यह सभी एक्टर्स हैं। तुम जानते हो बाप द्वारा हम सुनते हैं। बाकी प्रेरणा आदि की बात नहीं। तुम्हारी बुद्धि में जो ज्ञान है वह शूद्रों की बुद्धि में हो न सके। वर्ण भी गाये हुये हैं। तुम समझते हो; क्योंकि बाप ने समझाया है। वह सिर्फ कहते हैं देवता, क्षत्री, वैश्य, शूद्र। तुम अपन को ब्रह्माकुमारी कहलाती हो। तुम बैठ कर अनुभव सुनाते हो। बाप पढ़ाते हैं। बाप अनुभव नहीं सुनावेंगे। यह सुना सकते हैं; परन्तु तुम समझते हो बाबा हमको पढ़ाते हैं।तो बाहर वाले भी समझें भगवान एक ही है। वही ज्ञान का सागर है। बच्चे जब समझाते हैं तो बुद्धि चली जाती है चित्रों पर समझाने को। बाप (से बुद्धियोग) रहे। याद से विकर्म विनाश होगा। वह बुद्धि से निकल जाता है। भक्तिमार्ग की कमाई झूठी। सुख कुछ नहीं। यह कमाई तो बहुत सुख देने वाली है। सुख से हटाना सन्यासियों का काम है; इसलिए कब वह राजयोग सिखला नहीं सकते। बेहद के बाप का यह है बेहद का वर्सा। बहुत सहज है। याद करना और आदि, मध्य, अंत को जानना। यह है संगमयुग का ईश्वरीय स्कूल। तुम पढ़ते ऐसे हो जैसे अलफ बे वाले पढ़ते हैं। तुम स्टूडेन्ट पढ़ते हो तो बच्चों को अलफ़ और बे भी याद आते हैं। बाबा और बादशाही। और कोई तकलीफ नहीं। उठते–बैठते–चलते बाप की याद से बादशाही है ही; इसलिए अलफ़ को याद करना पड़े। पवित्र बनेंगे तो राज्य करेंगे। ऐसे–2 समझाते रहना है। बाप की महिमा भी करनी हैं बाप कहते हैं हियर नो ईविल। वह है शास्त्रों की बातों के लिए। उनसे नुकसान हुआ है। बाप ही समझाते हैं। ढेर के ढेर चित्र आदि बनाये हैं। बाप सभी समझाते रहते हैं। कुछ न कुछ नई प्वाइन्ट्स आते रहेंगे। बाकी मूल बात एक ही है। फिर नये–2 आते रहते हैं तो तुम भी पढ़ते रहते हो। बाप भी पढ़ाते रहते हैं। तुम बच्चे जानते हो आजकल कितने पदमपति हैं; परन्तु यह सभी खलास हो जानी है। कोई का वर्सा थोड़े ही रहेगा। करोड़ ,पदम सभी की मिट्टी में मिल जावेंग(ी)। बॉम्स आदि देखो कैसे बनाते हैं। यह रखने लिए थोड़े ही है। यह भी तुम जानते हो विनाश हुआ था और एक धर्म की स्थापना हुई थी। बाप कहते हैं मैं आया ही हूं सारी पुरानी दुनियां को खलास करने। यह भी ड्रामा में नूँध है। तुम स्वर्गवासी बनेंगे, बाकी सभी शान्तिधाम में चले जावेंगे। अच्छा, मीठे–2 बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।